

वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

# VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 101	Year 12	Volume 08	September 2021 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 150
------------------	-----------	---------	-----------	------------------------------	---------	--

## पिछले कर्मों का फल

सूत्रकार व्यास जी लिखते हैं कि निरन्तर निदिध्यासन द्वारा ध्यान करने से ब्रह्म की अनुभूति होने लगती है फिर जब साधक को ब्रह्म का साक्षात्कार हो जाता है तो उसके पाप कर्म भी छूटते जाते हैं, क्योंकि ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करने के बाद साधक पाप कर्मों को छोड़ देता है, यद्यपि पिछले जन्म के शुभाशुभ कर्मों का फल तो उसे भोगना पड़ता है परन्तु जो संचित कर्म है



Contact:

**BHARTENDU SOOD**

Editor, Publisher & Printer

# 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047

Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,

E-mail : [bhartsood@yahoo.co.in](mailto:bhartsood@yahoo.co.in)

वे सब ज्ञान रूपी अग्नि की शक्ति से दग्ध हो जाते हैं अर्थात् नष्ट हो जाते हैं।

छान्दोग्योपनिषद् में लिखा है कि जैसे कमल के पते पर पानी नहीं ठहरता है ऐसे ही ब्रह्म ज्ञानी साधक को पाप नहीं लगता। फिर जब वह ब्रह्म की अलौकिक शक्ति को जान लेता है तो उसका पाप कर्मों से भी कोई सम्बन्ध नहीं रहता। जैसे सीक के ऊपर की रूई आग में डालते ही जल उठती है वैसे ही ब्रह्म ज्ञानी के सब पापों का नाश हो जाता है।

जैसे मनु स्मृति में भी लिखा है कि अग्नि अपनी गर्मी से ईंधन को एक क्षण में जला देती है वैसे ही ब्रह्म ज्ञानी साधक ज्ञान की दिव्य अग्नि से पापों को जला देता है। अर्थात् ब्रह्म ज्ञान की शक्ति से पिछले पापों का विनाश हो जाता है। फिर ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करने पर उपासक को मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। मोक्ष में भैतिक सुखों की अनुभूति नहीं होती।

मुण्डकोपनिषद् में लिखा है कि जब उपासक को ब्रह्म का साक्षात्कार हो जाता है तो उसके सभी कर्म क्षीण हो जाते हैं अर्थात् ब्रह्म ज्ञानी पाप-पुण्य दोनों कर्मों से छूट जाता है और अन्त में ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है।

प्रश्न : शिष्य पूछता है कि अगर ज्ञान की शक्ति से पाप-पुण्य दोनों ही क्षीण हो जाते हैं तो फिर अग्निहोत्र परोपकार जैसे कर्म करने वाली क्रियाएँ भी समाप्त हो जाएगी?

सूत्रकार भी समझाते हैं कि अग्निहोत्र दान-परोपकार जैसे निष्काम शुभ कर्म को ज्ञान की अग्नि को और भी अधिक प्रकाशमान करते रहते हैं इन्हीं निष्काम कर्मों के करता हुआ साधक ब्रह्म ज्ञान को प्राप्त कर लेता है। इस लिये तो सच्चे ब्रह्म

ज्ञानी अग्निहोत्र दान और परोपकार जैसे शुभकर्मों को असीम श्रद्धा व निष्ठा से करते रहते हैं और इन को करना कभी भी नहीं भूलते।

श्रीमती कृष्णा चौधरी

9872167936

लेखक के बारे में अगले पृष्ठ में पढ़ें

**शिमला का**

**कामधेनु जल**

**SHARDA**

गैस ऐसिडिटी व पेट के विकारों के लिए  
एक असरदार व अदभुत आयुर्वेदिक औषधि

एक बोतल कई महीनों चले । फोन : 0172-2662870, 9217970381

Marketing Office : H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047

## पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 150 रुपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172-2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दें
2. आप चैक या कौश निम्न बैंक में जमा करवा सकते हैं :-  
Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 IFC Code - CBIN0280414  
Bhartendu sood, IDBI Bank - 0272104000055550 IFC Code - IBKL0000272  
Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, IFC Code - PSIB0000242
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं। H.No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रुचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का चैक भेज दे।

या Google Pay No. 9217970381 या Paytm No. 9217970381

## लेखिका श्रीमती कृष्णा चोधारी के बारे में



श्रीमती कृष्णा चोधारी 84 वर्षीय सेवानिवृत्त हिन्दी लेखकार हैं। परन्तु इस से कहीं अधिक महत्वपूर्ण इनका परिचय यह है कि आप बहुत ही विदुषी व स्वाध्यायशील हैं व एक सच्चे आर्य समाजी की तरह अपने अथाह ज्ञान को लोगों के कल्याण के लिये उपदेशों व पुस्तकों द्वारा बांटती हैं। इनकी तीन पुस्तकें वैदिक अनुभूतियाँ, उपनिषद अनुभूतियाँ व षडदर्शन अनुभूतिशां प्रकाशित हो चुकी हैं। मैंने कई बार इनके उपदेश सुने और बहुत ही प्रभावित हुआ। मैंने यह भी पाया कि आप वेदों में बताई विधि द्वारा जीवन जी रहें हैं और यही कारण है कि आपके कर्मों ने आपकी वास्तविक आयु को कहीं पीछे छोड़ दिया है। एक और बहुत ही अच्छी बात जो मझे

छू गई, वह यह है कि आप जीवन के इस भाग में समाज से कुछ लेने की बजाये सब कुछ देना चाहती हैं। यह बहुत ही बड़ी बात है जब हम देखते हैं कि हम में बूढ़े होने पर भी लोभ व संग्रह करने की भावना वैसी ही बनी रहती है बल्कि मेरे जैसों में तो कुछ बढ़ ही जाती है। मैं इस योग्य नहीं कि इतनी महान विदुशी व जिसने वेद की सुक्ति मनुभव को जीवन में सफलता से धारण किया हुआ है कुछ लिखुं फिर भी जो देखा व पाया वह स्वयं ही लिखा गया। किसी ने कहा है—&when you are overwhelmed you want to share with others.

9872167936

पत्रिका में दिये गये विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादक जरूरी नहीं उन से सहमत हो। लेखकों के मोबाईल नम्बर दिये हैं, आवश्यक हो तो आप उन से सम्पर्क कर सकते हैं। न्यायिक प्रक्रिया के लिये चण्डीगढ़ ही मान्य है।

Editor, Publisher and Printer Bhartendu Sood. Printed at Amit Arts 36 MW, Industrial Area, Phase -1, Chandigarh. Phone No-0172-4614644 Place of Publication House No-231, Sector-45-A, Chandigarh-160047

## पुस्तक

### (English Book of short stories—Our Musings)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी 70 छोटी कहानियों, जो कि अंग्रेजी समाचार पत्रों में समय समय पर प्रकाशित हुई हैं, का संग्रह एक पुस्तक में प्रकाशित किया है, जिसका नाम **Our Musings** है। इस पुस्तक की कीमत 150 रुपये है। जो भी इस पुस्तक को खरीदने का इच्छुक हो वह 100 रु भेजकर या हमारे बैंक ऐकाउंट में जमा करवा कर मंगवा सकता है। बैंक ऐकाउंट वही है जो कि वैदिक थोटस पत्रिका में दिये हैं। भेजने का खर्चा हमारा होगा।

कृपया निम्न बातों का ख्याल रखें,

पुस्तक ईंगलिश भाषा में है।

पुस्तक केवल धार्मिक न हो कर जीवन के विभिन्न पहलुओं को छूती है



नीला सूद, भारतेन्दु सूद 9217970381

पत्रिका में दिये गये विचारों के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखकों के टेलीफोन न. दिए गए हैं न्यायिक मामलों के लिए चण्डीगढ़ के न्यायालय मान्य है।



## PAYBACK OBLIGATION

Bhartendu Sood

In the eighties of the last century, I stayed in Dandeli, a tourist town on the bank of Kali river in Karnataka, for almost seven years. Therefore, sometimes back when I visited the place again, it was natural that I spent time with my old friends.

Two friends with whom I was in constant touch in the last 30 years had retired from senior positions and both have enough wealth. The one whom I visited first was rolling in luxury. His lifestyle was telling that he possessed everything which made life easy and comfortable. He'd routinely kept on investing money in future security instruments even when they were touching 70s. Death, which is as inevitable as birth, didn't appear to be in their thought process.



**Azim Premji**

Another thing which was evident was that the couple used their huge wealth to enrich the lives of their children and grandchildren by gifting them gold and property from time to time. They were very happy with their small world confined to their kin.

Then I visited my second friend. His austere lifestyle was visible in his each activity. Despite having huge wealth frugality was visible in his actions. When in conversation he talked about life of the large swath of our country and his only reference about his sons and daughters was that they were doing well in their lives.

Slowly, I came to know that he and his wife, who is a doctor, had started a charitable institution after their retirement and it provided free health services in the adjoining villages. His wife would leave in the morning and would be back at 2 pm after spending some time at all the centres. He used this time for banking and conducting purchase of various items for the institutions they were running. At around 3 pm he would visit the centres to ensure that nothing was amiss. Once during the course of discussion, when we moved to spiritual realm, he quipped, "I always feel that whatever I have been bestowed with, belongs to God, the creator of this Universe, and he has given it to me for using and enjoying in a manner that it benefits me as well as others who are not as fortunate as I happen to be."

These two different approaches to life have their own impacts on our mind and soul. First brings temporary pleasure only to us and has been named —Atamtushti, whereas, the second not only brings eternal happiness to the doer, but makes many more lives happy and is rightly named as Loktushti.

We are duty-bound to the society which gives us so much. 'Shastras' tell us that one's last phase of life is 'pay-back time' for what we received in the earlier phases. And this is not an option but an obligation that one must perform for one's own good. This can be done not only by making charity of wealth but in many other ways that benefits humanity

## पुत्र अमित का अनंत अज्ञात यात्रा के लिए प्रस्थान

### सीताराम गुप्ता

चौदह अगस्त को सुबह-सुबह पुत्र अमित हमेशा के लिए छोड़ कर चला गया लेकिन बार-बार लगता है कि अमित अभी आने वाला है। रात को लगता है कि अमित अभी तक क्यों नहीं आया। पूछूँ कि कहाँ रह गया। इतनी देर क्यों कर दी? लेकिन किसी से कुछ पूछने अथवा अमित को फोन करने की ज़रूरत नहीं पड़ती क्योंकि कुछ क्षणों के उपरांत स्वयं ही आभास हो जाता है कि अमित अब कभी लेट नहीं होगा। अमित जब कभी लेट हो जाता था और फोन अथवा मैसेज का जवाब नहीं दे पाता था तो बड़ी बेचैनी होती थी और तब तक बेचैनी बनी रहती थी जब तक उसका फोन नहीं आ जाता अथवा वो स्वयं घर नहीं आ जाता। उसके आने के बारे में निश्चित हो जाने के बाद ही सोने का कार्यक्रम बनता था चाहे कितनी भी देर क्यों न हो जाए। अब न वो बेचैनी है और न उस बेचैनी से मुक्त होने की प्रसन्नता। कभी-कभार की



उस बेचैनी से मुक्ति में बड़ा सुकून मिलता था। बड़ी प्रसन्नता होती थी।

हर बार ये अहसास होता था कि अमित कोई छोटा बच्चा थोड़े ही है जो उसकी इतनी चिंता की जाए। ये प्रसन्नता के छोटे-छोटे कण एकत्र होकर ढेर लग गया। लेकिन वर्तमान पीड़ा के

समक्ष इन सब खुशियों का आयतन नगण्य है। आज जो पीड़ा है उससे मुक्ति की संभावना भी दृष्टिगोचर नहीं होती। हर समस्या का कुछ न कुछ समाधान निकल आता है। हर मर्ज़ की कोई न कोई दवा होती है। अमित के अभाव की पीड़ा से मुक्ति असंभव है। फिर भी लोग कहते हैं कि हर पीड़ा से हर दर्द से एक न एक दिन मुक्ति अवश्य मिल जाती है। क्या कोई और बड़ी पीड़ा मिलने वाली है जो अमित के अभाव की पीड़ा को समाप्त कर देगी ये सोच कर ही दिल दहल जाता है। ज्ञानीजन सांत्वना देते हुए कहते हैं कि अभी क्या पता और क्या होना बाकी है। ऐसे ज्ञानीजनों से बहुत वितृष्णा होती है। कैसे स्वीकार करूँ कि अमित अब नहीं है। इस बात का अहसास तो उसके जाने के बाद ही हुआ है कि मैं अमित से कितना प्यार करता था।

अब भी लगता है कि जो घटित हो चुका है वो झूठ है। ऐसा क्यों लगता है? लगता है अमित अभी सामने आकर खड़ा हो जाएगा और अपनी मजेदार बातों से आसपास एकत्र हो चुकी उदासी को उठा कर दूर फेंक देगा। अभी वो कुछ भी ऐसा पूछ लेगा जिसका जवाब देने के लिए सोचना पड़ेगा। अभी पूछेगा कि पापा जुराबें लाए कि नहीं। रुमाल लाए

कि नहीं। पिछले दिनों उसकी जुराबें फटने लगीं तो नई लेकर आया था लेकिन वे अच्छी नहीं निकलीं और सारी की सारी कुछ दिनों में ही फट गई। उसने कहा कि पापा आप ही लाकर दो पहले जैसी अच्छी जुराबें और बढ़िया वाले बड़े रुमाल। मेरा फरवरी के महीने में अमित के लिए जुराबें, रुमाल और दूसरी कई चीजें लाने का प्रोग्राम था लेकिन जा नहीं पाया। फिर कोविड की दूसरी लहर ने अपना कहर ढाना प्रारंभ कर दिया। जो अमित स्वयं एक वर्ष से कोविड-संक्रमित रोगियों का उपचार कर रहा था एक दिन उसी संक्रमण ने अमित को भी अपनी गिरफ्त में ले लिया।

ये कटु सत्य है कि छूना तो दूर हम जीवन में अब कभी भी अमित को न तो देख पाएँगे और न ही उसकी बातें सुन सकेंगे। फिर भी इन सब बातों का इंतज़ार है। लगता है कभी तो ये चमत्कार होगा। अमित को घूमने का बड़ा शौक था। इतना घूमता था कि अब लगता है जैसे सौ साल के जीवन जितना घूमना-फिरना चालीस साल में ही पूरा कर गया। अमित इतनी अधिक दूर चला गया जहाँ से लौटकर आना असंभव है। जहाँ से लौटकर आना असंभव नहीं था अमित वहाँ भी कभी नहीं गया। मुझे याद है अमित के एमबीबीएस करने के फ़ौरन बाद मालदीव के एक हॉस्पिटल में काम करने का ऑफ़र मिला था। अमित ने पूछा था, “पापा चला जाऊँ?” मैंने कहा था कि चला जा पर एक साल से ज़्यादा के लिए नहीं। अमित ने कहा, “नहीं पापा मैं नहीं जाता। एक साल के लिए भी नहीं। अगर वहाँ से वापस आने का मन नहीं किया तो? नहीं पापा मैं आप सबको छोड़कर बाहर नहीं जाऊँगा।”

मैंने कहा था कि एक साल में ऐसा कुछ नहीं होगा। जा चला जा। विदेश यात्रा भी हो जाएगी। हम भी घूमने के लिए वहाँ आ जाएँगे। अमित ने कहा था, “पापा विदेश तो जाना है। पूरी दुनिया घूमनी है लेकिन काम करने बाहर नहीं जाऊँगा।” अमित दुनिया में कहीं भी चला जाता। कभी नहीं आता मिलने भी पर एक उम्मीद तो बनी रहती कि कभी न कभी ज़रूर मिलेंगे। अब बता कहाँ ढूँढ़ने जाऊँ तुझे? कहाँ मिलने आऊँ? प्रषस्त के पैदा होने के कुछ दिनों बाद अमित और सृष्टि दोनों को राजस्थान के रींगस नामक क़स्बे के एक चैरिटेबल हॉस्पिटल में काम करने का ऑफ़र मिला। पूरा हॉस्पिटल इन दोनों को ही संभालना था। पैसे भी काफी अच्छे मिलने की बात थी। दोनों जाने के लिए तैयार हो गए। घर में भी किसी ने उनके जाने को लेकर आपत्ति नहीं की। रींगस दूर ही कितना है? हर सप्ताह बच्चे मिलने आ जाएँगे और यदि वे नहीं आ पाएँगे तो हम स्वयं उनसे मिलने चले जाया करेंगे। वहाँ नहीं जमेगा तो वापस आ जाएँगे।

तैयारी शुरू हो गई। घर में सामान इतना था कि नया लेना ही नहीं पड़ा। फिर भी जिन चीज़ों की कमी थी वे ख़रीद ली गई। अमित ने अपनी वर्तमान नौकरी छोड़ने के लिए नोटिस भी दे दिया। उचित समय पर रिजाइन कर दिया। रींगस जाकर रहने के लिए घर भी देख आए। वहाँ घर में बाग़बनी करने के लिए भी तैयारी कर ली। जिस दिन जाना तय था उससे पहले दिन रात तक जाने की तैयारियाँ चलती रहीं। रात को सोने जाने से पहले अमित ने अपना फ़ैसला सुनाते हुए कहा, “मम्मी मैं नहीं जा रहा रींगस।” हम सब उनके जाने से दुखी नहीं थे लेकिन उनके न जाने के फ़ैसले से बहुत खुश हुए। मुझे तो पहले ही लग रहा था कि अमित कोई न कोई बहाना बनाकर रींगस जाने से मना कर देगा और यदि जाएगा भी तो जल्दी ही लौट आएगा। अमित की नई जॉब कई महीनों बाद लगी लेकिन वो खुश था क्योंकि वो हमें और अपने दोस्तों को छोड़कर नहीं गया था। जो अमित हमें छोड़कर रींगस तक नहीं गया वही अमित इतनी जल्दी

हम सबको छोड़कर इतनी दूर चला गया कि वापसी असंभव है।

कोविड के संक्रमण के कारण अमित के लंग्स इतने खराब हो चुके थे कि उनमें सुधार की कोई संभावना नहीं थी। लंग्स-ट्रांसप्लांट ही एकमात्र विकल्प बचा था। पहली अगस्त को लंग्स-ट्रांसप्लांट भी हो गया लेकिन ये काफी देरी से हुआ। इस देरी के लिए भी कुछ लोगों के द्वारा की गई भयंकर भूलें उत्तरदायी हैं। लंग्स-ट्रांसप्लांट के बाद तो अमित की हालत और ज़्यादा तेजी से बिगड़ती चली गई। ये तय था कि अमित ठीक भी हो जाता तो उसे संक्रमण का जबरदस्त खतरा बना रहता। वो किसी भी तरह का कार्य नहीं कर पाता। उसे अपनी प्रेक्टिस भी छोड़नी पड़ती। हमें ये सब स्वीकार था बस अमित हमारी आँखों के सामने होता। हम उससे बात कर पाते। सृष्टि उसकी सेवा करने में कोई कसर नहीं रखती। हम भी उसे प्रसन्न रखने का पूरा प्रयास करते। भाई कुछ दिन के लिए तो ठीक होकर घर आ जाता। हमसे कुछ दिन बातें कर लेता। अपने मन की कह लेता। हमारे मन की सुन लेता। अपने नन्हें प्रपुत्र के भविष्य के लिए कुछ निर्देश हमें दे जाता। तेरी इच्छापूर्ति करके ही हम कुछ संतुष्टि पा लेते। लेकिन नहीं। क्रूर काल ने इस अवसर से भी हमें वंचित रखा।

हमसे कुछ कहे बिना व हमें हमारी बातें कहने का मौका दिए बिना ही अमित दूर बहुत दूर चला गया। पता नहीं उसे इस बात का आभास था या नहीं लेकिन यदि हमें ऐसा आभास होता तो कम से कम हम अपने दिल की बातें ज़रूर उसे कह डालते। पूरे साढ़े तीन महीनों तक उसकी ऐसी हालत रही कि वो एक शब्द भी नहीं बोल पाया। एक बहादुर बच्चा बेड पर बेबस—सा पड़ा बस तड़पता रहा। इससे अच्छा तो वो 21 मई को ही चला जाता जब मेदांता में उसकी हालत बिगड़ गई थी और उसका ऑक्सीजन सैचुरेशन लेवल 35 तक नीचे चला गया था। कम से कम उसे आगामी पौने तीन महीनों तक भयंकर मानसिक व शारीरिक यंत्रणा तो नहीं झेलनी पड़ती। उसने अत्यंत विशम परिस्थितियों में भी स्वयं को जिंदा रखा। मेरे हमउम्र कई परिचित व रिश्तेदार हैं जिनके बच्चे विदेश चले गए हैं। कइयों के बहुत अच्छे पैकेज हैं। कई बार लगता था कि अमित ने आठ—दस साल मेडिकल की पढ़ाई की लेकिन सेलरी उतनी अच्छी नहीं मिलती। तीन—चार साल पढ़े बच्चे उससे कई गुना ज़्यादा सेलरी ले रहे हैं लेकिन न अमित के लिए और न हमारे लिए ये सब कोई अर्थ नहीं रखता था।

अमित जब थका—हारा हॉस्पिटल से लौटकर घर आता था तो उसे देखकर बड़ा सुकून मिलता था। थकान के बावजूद कभी उसके चेहरे पर तनाव या गुस्सा नहीं होता था। कई बार लंबी ड्यूटी होने के बाद भी अमित निर्धारित समय से कई—कई घंटे लेट आता था। पूछने पर बतलाता था कि उसका कोई पेपेंट क्रिटिकल कंडीशन में था इसलिए देर हो गई। “क्या कोई रिलीवर नहीं आया था इसलिए लेट हो गया?” इस प्रश्न के उत्तर में प्रायः यही सुनने को मिलता था कि मैं उसको बीच में छोड़कर नहीं आना चाहता था। अमित बहुत अधिक जिम्मेदारी से काम करता था। उसे सेवा करके खुशी मिलती थी। उसकी इन आदतों पर हमें भी न केवल खुशी होती थी अपितु गर्व की अनुभूति भी होती थी। अमित को खोने के साथ—साथ इस बात की भी पीड़ा है कि उसे कम से कम और तीस—चालीस वर्ष तक सेवा करनी थी। हम उस आनंद से वंचित हो गए जो उसे सेवा करते देख मिलता था। ये आनंद हमें स्वस्थ रखता था।



## दुर्लभ होते हैं ऐसे मददगार

सीताराम गुप्ता

निरंतर एक वर्ष तक कोविड से संक्रमित रोगियों का उपचार करते हुए पुत्र डॉक्टर अमित के स्वयं कोविड से संक्रमित हो जाने के बाद उसके लंग्स पूरी तरह से जवाब दे चुके थे अतः वो पिछले दो महीनों से लगातार एकमो सपोर्ट पर चल रहा था। हालत नाजुक बनी हुई थी। उसके उपचार के लिए पूरा परिवार दो महीनों से घर से डेढ़ हज़ार किलोमीटर दूर हैदराबाद में डेरा डाले हुए था। एकमो सपोर्ट पर ब्लड लॉस बहुत ज़्यादा होता है अतः बार-बार रक्त चढ़ाने की ज़रूरत पड़ रही थी। ब्लड ही नहीं प्लाज्मा व प्लेटलेट्स की भी निरंतर ज़रूरत पड़ रही थी। सभी मित्र व परिचित लगातार पूरा ज़ोर लगाकर रक्तदान के लिए डोनर भिजवाने की कोषिषों में जुटे हुए थे फिर भी रक्त की कमी पड़ रही थी अतः उन्हें और अधिक डोनर्स भेजने के लिए बार-बार मैसेज किए जा रहे थे। एक परिचित द्वारा दिए गए नंबर पर फोन किया तो उन्होंने पेशेंट की पूरी डिटेल्स भेजने के लिए कहा। उन्हें उसी समय अपेक्षित विवरण भिजवा दिया। अगले दिन शाम तक जब कोई डोनर नहीं आया तो उनको पुनः फोन किया और कुछ डोनर्स भिजवाने का निवेदन किया। उन्होंने झुंझलाते हुए जवाब दिया, “अब रात को मैं कहाँ से डोनर्स लाऊँ? आपकी डिटेल्स हरियाणा नागरिक संघ के ग्रुप में डाल तो दी हैं वे आपसे संपर्क कर लेंगे।”

इस घटना के एक सप्ताह पूर्व ही मेरे एक कजिन ने हैदराबाद में रह रहे एक परिचित सुरेश सिंघल जी को हमारी मदद करने के लिए कहा था। सुरेश सिंघल जी ने उसी रात स्वयं मुझे फोन किया और सारी जानकारी ली। अगले दिन सुबह ही गाड़ी भेजकर मिलने के लिए बुलाया और वस्तुस्थिति को समझकर हर प्रकार की मदद करने का आश्वासन दिया। हम हैदराबाद में पिछले दो महीनों से जिस मकान में रह रहे थे उसे बदलना चाहते थे। मैंने उन्हें हॉस्पिटल के आसपास किराए पर एक अच्छा सा मकान दिलवाने में मदद करने के लिए कहा। उन्होंने इस विशय में बहुत सारे लोगों से संपर्क किया और मुझे साथ लेकर भी कई जगह गए। कई मकान दिखलाए। संयोग से एक अन्य परिचित की मदद से अगले दिन ही एक मकान मिल गया। मेरे मन में आया कि क्यों न डोनर्स के लिए भी सुरेश सिंघल जी से मदद ली जाए लेकिन उपर्युक्त घटना के बाद किसी को भी फोन करने से डर सा लग रहा था। अधिकांश लोग एनजीओज के नंबर भेज रहे थे लेकिन लगभग सभी एनजीओज ने न केवल मायूस किया था अपितु बेकार में समय भी खूब नश्ट किया था। दिल्ली के कई बड़े उद्योगपतियों से अच्छे संबंध और मिलना-जुलना रहा है। उन लोगों ने भी हैदराबाद में अपने परिचित होने और उनसे हर प्रकार की मदद करवाने का आश्वासन दिया लेकिन कोई एक डोनर भी उपलब्ध नहीं करा पाया।

हां बिहार के आरा की एक एनजीओ ने वहीं से हैदराबाद में लगातार ढाई महीनों तक रक्तदान के लिए नियमित रूप से डोनर्स भिजवाने की व्यवस्था की। ब्लड, प्लाज्मा व प्लेटलेट्स की अत्यधिक आवश्यकता को देखते हुए किसी को भी फोन किया जा सकता था। अगले दिन मैंने सुरेश सिंघल जी को भी फोन किया और उन्हें भी कुछ डोनर्स भिजवाने के लिए कहा। उन्होंने पूछा कि कितने डोनर्स की व्यवस्था करनी है? मैंने जब कहा कि दो, चार, दस, बीस जितने संभव हो सकें भिजवा दीजिए तो उन्होंने कहा कि मैं आधा घंटे बाद बात करता हूँ और ये कहकर फोन रख

दिया। पंद्रह मिनट बाद ही सुरेश सिंघल जी का संदेश आ गया। उसमें बारह व्यक्तियों के नाम लिखे थे। नीचे लिखा था ये सब हमारे परिवार और हमारे पार्टनर के परिवार के बच्चे हैं। ये सब बच्चे रक्तदान करेंगे। आपको किसी भी प्रकार की चिंता करने की जरूरत नहीं है। और जिस चीज की भी जरूरत हो निस्संकोच बतला दीजिएगा और किसी भी समय फोन कर लीजिएगा। इस संदेश के आधा घंटे के अंदर-अंदर सभी युवक रक्तदान के लिए हॉस्पिटल पहुंच चुके थे। इन युवकों में सुरेश सिंघल जी के दोनों पुत्र भी थे। सचमुच दुर्लभ होते हैं ऐसे व्यक्ति और ऐसे परिवार।

सीताराम गुप्ता,

ए डी-106-सी, पीतम पुरा, दिल्ली-110034, मोबा0 नं0 9555622323

Email :srgupta54@yahoo.co.in

## हमारे मुख्य लेखक व सहयोगी श्री सीताराम गुप्ता को पुत्र शोक

वैदिक थोटस व श्री सीताराम गुप्ता दोनों एक दूसरे के प्रायवाची हैं, 2010 में जब वैदिक थोटस का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया था, तब से वह हमारे मुख्य लेखक व सहयोगी रहें हैं। कोई भी ऐसा अंक नहीं होगा जिसमें इन के एक या दो लेख न हों। कारण पाठकगण की पहली पसन्द इनके मानविय मूल्यों से परिपूर्ण लेख होते हैं जो कि धर्म की सही परिभाषा को सामने लाते हैं। इस बार जब उन के लेख प्राप्त हुये तो उन को पढ़ने के बाद में हैरान व सत्भद रह गया। एक महान लेखक का अपना बेटा मानवता की सेवा में शहीद हो गया था।

वैदिक थोटस व इसके सभी पाठकगणश्री सीताराम गुप्ता के बहुत योग्य व होनहार सपुत्र डा अमित गुप्ता की कोविड में सेवा के दौरान शहीद होने की सूचना मिलने से बहुत दुखी हैं व अपना शोक सन्देश भेजते हैं। डा अमित गुप्ता को शहीद का दर्जा देना बहुत उपयुक्त होगा क्योंकि अमित जी व उनकी डाक्टर पत्नी दो महीन लगातार कोविड मरीजों की सेवा में दिन रात लगे रहे और परिणाम स्वरूप उन्हें व उनकी पत्नी दोनों कोविड की चपेट में आ गये। जब कि उनकी पत्नी तो ईलाज द्वारा ठीक हो गई, डा अमित का जीवन बहुत काशिशों के बावजूद भी बचाया न जा सका। ईश्वर को यही मंजूर था, हम उस के आगे नतमस्तक हैं।

सीतारामजी! हम सब आपके दुख में दुखी हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि द्विंगत आत्मा को शांति प्रदान करें और आप व आप के परिवार को पहाड़ से भी बड़ा दुख सहन करने की शक्ति दे।

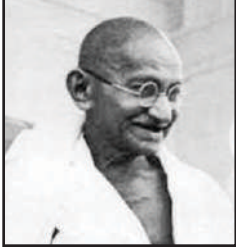
उनके दो लेख वस्तुतः स्थिती और परिवार द्वारा दिखाये गये अदभ्य साहस को बताते हैं।

नीला व भारतेन्दु सूद व वैदिक थोटस परिवार

श्री सीताराम गुप्ता का मोबाईल नम्बर है...9555622323

## Earn your bread by your own physical labour

Ashok Vohra



Gandhiji prescribed 11 vows for the physical, spiritual and moral upliftment of inhabitants of Sabarmati Ashram. These vows though specifically formulated for the Ashramites, are equally applicable to all. One of the 11 vows was sharirik-shram, physical labour or bread labour. The notion of bread labour emphasises that a man must earn his bread by his own physical labour.

Bread labour does not mean that one has to produce one's own food. It means that everyone has to engage in some kind of physical labour to earn his food. Gandhiji included spinning or weaving, or taking up carpentry or smithery, as part of bread labour. Following him, we may extend the connotation of bread labour to include simple everyday activities like cutting of vegetables, kneading the flour for making chapatis, cooking, cleaning and mopping floors, washing dishes, cleaning the washrooms, washing clothes or any other household work involving physical activity.

Gandhiji was first introduced to the idea of bread labour by Leo Tolstoy. Tolstoy had borrowed it from the Russian writer TM Bondaref. The idea was explained by John Ruskin in his book *Unto This Last*. According to him, the law of bread labour is based on the Biblical saying, "Earn thy bread by the sweat of thy brow." He goes on to say that just as we put our heart and soul into doing any work, we must take delight in pursuing bread labour strenuously. Bread labour as well as other work are not "to be done by halves and shifts, but with a will; and what is not worth this effort is not to be done at all."

Following him, Gandhiji upheld that, "God created man to work for his food and said that those who ate without physical work were thieves." He compared bread labour with the notion of yajna – sacrifice taught by Krishn to Arjun in the Bhagwad Gita. Kaka Kalelkar defines yajna as "a physical act performed for the welfare of all".

Gandhi also justifies bread labour on the ground that doctors advise the rich as well as the poor to do physical and breathing exercise daily in one form or the other to keep fit. Bread labour is a kind of physical activity. It is a productive activity which contributes to one's labouring enough for his food. If everyone takes to bread labour, the world would become a much "happier, healthier and more peaceful" place.

Glorifying bread labour does not imply denigrating intellectual work. Gandhiji upholds that the intellectual labour, "often is, infinitely superior to bodily labour, but it never is, or can be a substitute for it, even as intellectual food, though far superior to the grains we eat, never can be a substitute for them. Indeed, without the products of the earth, those of the intellect would be an impossibility." Moreover, he argues that, "The needs of the body must be supplied by the body. Mere mental, that is, intellectual labour is for the soul and is its own satisfaction." Bread labour complements intellectual labour, rather "it improves the quality of the intellectual output."

It is easy for an intellectual worker who is used to working on the table to engage himself in physical work, while it is almost impossible for a physical labourer to "sit at the table and write". In fact, Gandhiji interprets the slogan "Return to the villages" not in what connotes its literal sense, rather by it he means "a definite, voluntary recognition of the duty of bread labour".

**(The writer is former professor of Philosophy, Delhi University)**

## प्यार को, मोह के जाल में न बदलें

भारतेन्दु सूद

जहां प्यार मनुष्य के लिये एक शक्ति है वहीं मोह उसकी कमजोरी व शत्रु है। शास्त्रों में मोह को व्यक्ति का उतना ही बड़ा शत्रु बताया है जितना कि काम, क्रोध, लोभ व अहंकार को। हमारा मन असंख्य इच्छाओं से भरा रहता है। धन, वैभव, प्रतिष्ठा व नाम की इच्छा कभी पूर्ण होती प्रतीत नहीं होती व अक्सर यह किया पहले असन्तोष, फिर क्रोध व अन्त में निराशा को जन्म देती है। प्रकृति व जीवन के सौन्दर्य के सुख का आनन्द लेने के स्थान पर हम इन भौतिक इच्छाओं के पीछे भागते रहते हैं और यह दौड़ कभी खत्म नहीं होती, जब कि देखते ही देखते यह जीवन खत्म हो जाता है।



यह भी सम्भव नहीं है कि हम किसी भौतिक वस्तु की इच्छा न करें। भौतिक इच्छाओं के बिना तो व्यक्ति उन्नति ही नहीं कर सकता। वेद शास्त्र भी भौतिक, मानसिक व अध्यात्मिक तीनों प्रकार की उन्नति पर बल देते हैं। वेद में धन ऐश्वर्य के स्वामी बनने के लिये प्रार्थना करने के लिये कहा गया है। पर यह अवश्य है कि हम भौतिक, मानसिक व अध्यात्मिक तीनों के बीच सन्तुलन बना कर रखें। ऐसा करते हुये जीवन के तीसरे आश्रम में कदम रखने के बाद हम अपनी भौतिक इच्छाओं को कम करते जायें। ऐसा करने पर दो चीजें होगीं पहला इच्छाएं बढ़नी बन्द हो जायेंगी दूसरा यदि आप में तप, त्याग व ईश्वर का सन्धि है तो इच्छाएं आहिस्ता-आहिस्ता खत्म हो जायेंगी।

हमारा मोह चाहे भौतिक वस्तुओं से है या प्राणीयों से, यह न केवल हमें नुकसान पहुंचाता है अपितु उस को भी नुकसान पहुंचाता है जिस के साथ हम मोह करते हैं, खास कर जो यह नहीं जानते कि संसार में हर चीज नश्वर है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि धन हर काम के लिये चाहिए। हमें धन को फेंकना नहीं है, फेंकना है धन के साथ मोह व लगाव को व धन के लोभ को। धन व दूसरी भौतिक वस्तुएं साधन होने चाहिए न की हमारा उद्देश्य। यह भी सत्य है कि हम अध्यात्मवाद को तभी अच्छा समझ सकते हैं जब हम भौतिकवाद से गुजर चुके होते हैं। जब संसार के सब भौतिक सुख प्राप्त कर के भी व्यक्ति को खोखलापन महसूस होता है तो उस के पग अध्यात्मवाद की ओर बढ़ते हैं और वह बाहर की बजाये अन्दर की ओर देखना शुरू करता है। जिसे कहा गया है—

कई बार हम अपने मोह के कारण बच्चों की प्रगति के रास्ते में बाधा बन जाते हैं। मूल शंकर के माता पिता का मोह भी ऐसा ही था। एक दिवान के पुत्र होने के नाते सब सुख व ऐश्वर्य उसके कदमों पर था। पर उसने उस मोह को ठुकरा दिया व वह लोगों को रास्ता दिखाने वाला दयानन्द बना। महान काव्य रचईता तुलसीदास की कहानी कौन नहीं जानता—उनकी पत्नि के इन शब्दों ने कि जितना प्यार मोह आप मुझ से करते हो वही यदि भगवान राम से करो तो, जीवन बदल जायेगा। इस लिये अपने प्यार को मोह के जाल में न बदलें। आचार्य चाणक्य नीतिवचन में कहते हैं मोह के



समान शत्रु नहीं। गुरुवर रविन्दर नाथ टैगोर ने बहुत ठीक कहा है—“प्यार तो स्वतन्त्रता देता है न की बन्धन”

हम अपने प्रिय जनों से जिनमें हमारे अपने बच्चे भी आते प्यार करें पर मोह नहीं। मोह एक स्वार्थपूर्ण प्यार है। मोह में फंसा व्यक्ति अकसर छला जाता है। शास्त्रों में एक कहानी आती है—एक राजा की दो रानीयां थी। छोटी वाली रानी बड़ी रानी से न केवल उमर में काफी छोटी थी पर उससे कहीं अधिक सुन्दर थी। जब की बड़ी रानी गम्भीर रहने वाली थी और राजा का शासन व्यवस्था में हाथ बटवाती थी। एक बार एक सन्यासी राजा के पास कुछ समय ठहरे। अपनी सेवा से प्रसन्न होकर जाती बार उन्होंने राजा को एक गिलास दिया और कहा जिस के पास भी यह गिलास रहेगा वह सदा जवान रहेगा। राजा अपनी छोटी रानी के मोह में फंसा हुआ था, उसने सोचा वह सदा जवान रहे इस से अच्छी और कोई बात नहीं और वह गलास राजा ने छोटी रानी को दे दिया व साथ में ही उस गलास का राज भी बता दिया। राजा ने इस बात का तनिक भी ख्याल न रखा कि बड़ी रानी के साथ उसने जीवन के कहीं अधिक बसंत गुजारे हैं और अगर उसकी राज्य की व्यवस्था अच्छी है तो उसका असली श्रेय बड़ी रानी को ही जाता था।

छोटी रानी के नजायज सम्बन्ध राज्य के सेनापति के साथ थे। वह उस के मोहजाल में फंसी हुई थी। उसने सोचा सेनापति सदा जवान रहे इस से अच्छी और कोई बात नहीं और वह गलास रानी ने सेनापति को दे दिया व साथ में ही उस गलास का राज भी बता दिया। सेनापति राज्य की मुख्य नर्तकी पर फिदा था उसने वह गलास वैसा ही सोचकर नर्तकी को दे दिया। नर्तकी चाहे नर्तकी थी पर ज्ञानवान थी अज्ञान से पैदा हुए मोहजाल को समझती थी। उसने विचार किया और इस निष्कर्ष पर पहुंची कि एक व्यक्ति जिस के पास यह गलास रहना चाहिए वह है बड़ी रानी जिस के कारण राज्य की व्यवस्था इतनी अच्छी थी अगर वह दीर्घ आयु प्राप्त करती है तो राज्य के लिए इस से अच्छी बात और कोई नहीं हो सकती और उसने वह गलास रानी के चरणों में भेंट कर दिया। रानी के लिये उसके पति से बड़ कर कोई नहीं था व उसने तुरन्त वह गलास राजा को तोहफे में दे दिया। राजा स्तब्ध रह गया। उस ने जब वही गलास देखा तो उसके पैरों तले ज़मीन खिस्क गई उसकी आंखें खुल गई उसे मालूम हो गया कि कैसे वह अपने मोह के कारण छला जा रहा था। राजा ने वैराग ले लिया पर हम सब वैराग नहीं ले सकते। जो हम कर सकते हैं वह है प्यार को, मोह के जाल में न बदलें।

**उपनिषद में कहा है**

**कृत लोकं पुरुषो भिजायते**

अपने अन्तःकरण में जैसी दुनिया मैं बनाता हूं वैसी ही मुझ को मिलती है। हमारे कर्मों का फल हमारे सामने आ जाता है। कोई दूसरा उसके लिये उत्तरदायी नहीं। कर्म के मार्ग पर ले जाने वाली है बुद्धि। इसलिये ईश्वर से यह प्रार्थना करते रहें

## Where does Modi stand among all Prime Ministers

Bhartendu Sood

Every Prime Minister has his own characteristics and style of working. Independent India's first Prime Minister Pt. Jawahar Lal was secular to boot and was probably the right choice by Mahatma Gandhi, as the country's CEO's main job at that point of time was to integrate different states having their own languages, cultures, aspirations and dominant religions, into one Nation which was not that easy as India was never a Nation after Mauraya empire. Nehru was an intellectual and a thinker who accepted criticism as an indispensable attribute of democracy. Even where strong difference of opinion existed he never tried to throttle right of free expression. He understood what democracy meant and strengthened it..



Lal Bahadur shastri showed how a PM could lead a frugal life to identify him with common masses. Probably the only PM whom even the opposition respected. During his time the country's main concern was food for 70% of the population and he laid maximum emphasis on that by giving impetus to the green revolution.

Indira Gandhi who had emerged on the scene by toppling the strong Congress party syndicate became darling of masses by winning the 1971 war which resulted in the division of India's main foe Pakistan into two parts. The 1971 war took her stature to an enviable height. Even leaders like Atal Vihari Vajpayee were full of adoration for her courage and leadership. She was described as Ma Durga by none other than Vajpayee himself. But her one blunder of forcing an emergency diminished her reputation though temporarily as she staged a strong comeback in 1980 Parliament elections by winning more than 350 seats. For all her shortcomings, she was the darling of masses. No other PM could match her charisma. She was ama for billions. She was free from any complex and dealt even with US President on equal terma.

Morarji Desai gave good governance. Relations with neighbours were at its best but then China was not belligerent at that time and Pakistan had not recovered from a shock defeat of 1971. But it is to the credit of Morarjithat peace prevailed in the country. Economy, GDP had not become buzz words. But his own Janta party had tons of problems as it had many leaders with vaulting ambitions as the Janta party had come to existence after the marriage of convenience between groups with ideological differences, like CPM and Jan Sangh. I think if Morarjee was allowed to complete full term, probably history would have been different.

Rajiv Gandhi, who was forced into politics by the circumstances, was a simple man who can be credited for infusing technology in transforming India, for the first time. It is he who kick started the technology up gradation in telecom and communication by roping in Sam Pitroda. He was clear hearted and very humble.and did not want to stick to the c hair by hook or crook. Even after getting maximum seats in 1989 elections , he preferred to stay in opposition.

PV Narsimha was a great scholar, who carried tons of experience in handling various ministries in the Congress regime but was a silent worker, a contrast to Modi. PV gave a new direction to the Indian economy with his bold decisions when the country's economy was on the brink of collapse. Like Nehru PV also assumed reins when the country faced a massive challenge for survival and did his job remarkably well.

Atal Vihari Vajpayee was past his heydays when he became PM, but he was the man who respected the views of even opposition leaders and carried everybody with him. Unlike Modi, harmony and consensus in implementing his decisions were his strengths. Though, in the later part of his career, he left governance to the likes of Promod Mahajan but, Mr Vajpayee pushed forward the road map shown by PV Narsimha Rao and Manmohan Singh without allowing Swadeshi brigade to tinker with.

Mr Manmohan Singh, a great scholar and a decent human being was not his own man but then the policies he pursued were the same, what he had formed during PV's tenure. India saw unprecedented growth in economy, jobs creation and GDP and per capita income during his tenure. But unlike Modi, he was never in control of things. He can be reckoned as the weakest Prime ministers who failed to control corruption. What is still worse, he allowed different coalition partners to have their own ways.

Mr Modi stepped in when the reputation of UPA had nosedived due to various scams. Mr Modi had his own qualities. He could mesmerize people with his oratory. He believed in using every weapon in the armory to win elections without any qualms. He modified the old phrase--'everything is fair in love and war' by adding the word elections and made it 'everything is fair in love, war and elections'. There is a yawning gap in what he promised and what he delivered but he has a strong organization, comprising of sycophants and bootlickers to defend his wrongs and magnify and amplify his insignificant achievements which was greatly helped by a very weak opposition and dwindling popularity of the Congress party. No other PM had the luxury of such a weak opposition as Modi all through has had. It is to his credit that he controlled corruption at the top.

Endowed with a knack of exaggerating even the debatable and insignificant achievements, he believes in giving publicity to everything he does, through media which gives the impression of being under his awe. He looks to personal glory in whatever he does. For example, Ram Krishan Advani was undisputedly the man behind Ram mandir movement and it is he who should have been given the honour of leading at the time of Ram Mandir foundation ceremony, but Modi didn't want the credit to go to any other person.

He promoted himself with publicity and advertisement which his handpicked CM's follow religiously. But as they say --'you can fool the people for some time not for all the times.' No wonder his personal popularity has taken a huge hit in 2021 as got reflected in West Bengal and Bihar elections. He should thank Asaduddin Owaisi who ate in to Muslim votes in Bihar otherwise before West Bengal, Bihar would have been out of NDA fold. Incidentally, most of the major actions he took in the last 7 years, backfired and ruined the economy, created unemployment instead of jobs, damaged the country's diplomatic relations, and caused untold hardships to the poor. Today none of the neighbouring countries is friendly with us except Sheikh Hasina who has her personal reasons.. He completely mishandled

Covid-II and his action of forcing the strictest lockdown during the first wave ruined the economy and caused grave hardships to the marginalized and low middle income group. He left even Indira Gandhi far behind in the matter of autocratic conduct and treating the party as a personal fiefdom. He finished democratic functioning in BJP. Those who have seen the Jan Sangh and BJP of the 90's of the last century can't believe that it is the same party where leaders had their own views and were very vocal. Who can forget Vajpayee's statement, 'Modi must follow Raj Dharam' which, as a PM of the ruling party, he made after Gujarat riots of 2001 but Advani put his foot down and came to Modi's rescue. Today in the same party nobody has the guts to take a stand which may defy Modi's dictate. Present day, BJP reminds one of the Congress party during Indira Gandhi's time. Yes, for 10% of Indians, who constitute the top layer in respect of per capita income, India is really shining during Modi's tenure. They have prospered as never before and in process have pushed India's Gini coefficient of inequality from 34.4 in 2014 to 56 in 2021

Perhaps BJP erred by putting him for this important job just on the basis of his successful stint as the Gujarat CM, completely forgetting that the role of a PM of a diverse and large country like India calls for all together different attributes which Vajpayee had in plenty and Modi lacked badly. His arrogance, overconfidence in pushing through the new ideas which are seldom backed up by the knowledge of the subject and stock taking of implications, aggravated the things. Demonetisation is one example. Country lost hugely by his whimsical and arbitrary actions of forcing demonetisation and the march 2020 lockdown. The state of economy and jobs in the period after 2014 can be best termed as 'stagnated'. But what is still worse is that all his major actions in the last seven years created disharmony and the peace eluded the country men.

When it comes to freedom of expression under article 19, his tenure has been worse than that of much taunted Indira Gandhi. The number of sedition cases filed during his regime exceeds total cases filed until 2014. India's main character as a secular democracy has got the biggest hit during his regime, a royal snub by US Vice President reconfirms it. For him 'human rights' is Western fad, best left for discussion in toothless UNO. He can relegate well being of the country and its masses in pursuit of his personal fads best manifested by his promoting Bhart Biotech for Vaccine production. Little did he realize that the company was not in position to meet even 10% of country's need of Vaccines? It is only the 2nd wave that made forced him to look to potential suppliers. If country is economically moving, it is all due to the momentum gained before 2014. He will get votes or even win also because we don't have the viable opposition. The country cannot to put into chaos by handing over the reins to likes of Rahul and Priyanka who are capable of derailing even the running train as happened in Punjab.

But, Modi will be remembered for introducing propaganda driven governments. I hope Mr Modi and BJP will understand that when the Sun rises, people have not to be told as the warmth and the light itself tells. If he or his CM's do something good for people they will realise and such propaganda and publicity are least warranted. Better to use this money on welfare activities. There was no need to advertise a record 2.3 crore vaccination on his birthday. One may ask that if a country is really capable of giving more than 2 crore jabs per day then why was it not being done on a regular basis and why did the country wait for the second wave to take away lacs of valuable lives even for locating vendors to supply vaccines.



## आओ प्यार करें ----प्यार बांटने की चीज़ है

नीला सूद

उपनिषद में कहा है. —जो व्यक्ति स्वयं को दूसरों में देखता है व दूसरों को अपने में अनुभव करता है वह किसी से भी धृणा नहीं कर सकता। और जब धृणा नहीं है तो हृदय में प्यार स्वयं ही पैदा होता है।



हम सब को पता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती को उनके रसोईये ने कुछ ऐसे लोगों के बहकावे में आकर जहर दे दिया जो कि अपने स्वार्थों

के लिये हिन्दु धर्म में महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लाये जा रहे सुधारों के विरुद्ध थे। परन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती ने न केवल उस रसोईये को क्षमा कर दिया परन्तु उसे वहां से भाग जाने में सहायता भी की। साधारण व्यक्ति इसे सुन कर न केवल हैरान होगा पर शायद विश्वास भी न करे कि कोई व्यक्ति कैसे अपने ही हत्यारे को न केवल क्षमा करता है बल्कि उस के लिये उस के दिल में करुणा भाव भी है।

हां आप सही हैं कि हर कोई व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता। यह वही कर सकता है जिसने महर्षि दयानन्द सरस्वती की तरह योगाभ्यास द्वारा यम और नियम के पालन से मन से हर तरह की मैल को दूर कर दिया हो। ऐसा व्यक्ति स्वयं को दूसरों में देखता है व दूसरों को अपने में अनुभव करता है। ऐसे में धृणा का स्थान नहीं रहता, बदले की भावना खत्म हो जाती है। और जब हृदय में धृणा नहीं है तो हृदय में प्यार व करुणा स्वयं ही पैदा होती है। धृणा किसी भी नाली में फसे उस पत्थर की तरह है जो की पानी को बहने नहीं देता। जैसे ही धृणा रूपी पत्थर को हटाया जाये, प्यार का पानी निरविरोध बहने लगता है।

धम्मपद में कहा गया है, “न हि वैरेण वैराणि शाम्यन्तीह कदाचन:” अर्थात् इस संसार में वैर से वैर कभी शांत नहीं होता।

जैसे ईश्वर प्रेम स्वरूप है वैसे ही ईश्वर ने मनुष्य को भी प्रेम स्वरूप बनाया है यह अलग बात है मनुष्य जब संसार के प्रलोभनो व मन की बृत्तियों में में बहकर स्वयं को ईश्वर से अलग कर लेता है तो उसमें कई बुराईयां घर करने लगती हैं जिस में धृणा भी एक है। अर्थात् सूर्य रूपी प्रेम को बादल रूपी धृणा के बादल घेर लेते हैं। यह बादल छट भी जाते हैं जब मनुष्य फिर से ईश्वर के नजदीक आ जाता है। ईश्वर के नजदीक आते ही ईश्वरीय गुण—प्यार, करुणा फिर से लौट जाते हैं।

जिस प्रकार प्रकाश से अन्धेरा दूर होता है, उसी प्रकार प्यार से धृणा का खातमा होता है। जैसे अन्धकार अन्धकार द्वारा खत्म नहीं कर सकता उसी तरह धृणा धृणा को नष्ट नहीं कर सकती। प्यार प्रकाश की तरह है व धृणा अन्धेरे के सामान है। जिस के अन्दर धृणा है वह अन्धकार ही फैला सकता है व जिस के अन्दर दूसरों के लिये प्यार है वह सब को प्रदिप्त करता है, रोशनी प्रदान करता है।

यक दार्शनिक के अनुसार—बजाये इसके कि हम यह कहें कि अपनी घृणा व क्रोध पर काबू पाओ उससे कहीं अच्छा है हम यह कहें कि सब से प्यार करें जब हम प्यार करेंगे तो घृणा व क्रोध वैसे ही खत्म हो जायेंगे जैसे दीपक के आते ही अन्धकार खत्म हो जाता है।

व्यक्ति प्यार तभी कर सकता है जब वह दूसरे व्यक्ति से कोई इच्छा या अपेक्षा न करता हो और उससे कुछ पाने के स्थान पर उसे कुछ देना ही चाहता हो। प्यार बिना कुछ इच्छा किये बांटने की चीज है। जो व्यक्ति प्यार पाने का इच्छुक रहता है वह दुखी रहता है और जो प्यार देना ही अपना जीवन का रास्ता बना लेता है वह सुखी रहता है। अथर्ववेद में कहा हैकृ

1. सहृदयं सामनस्यविद्वेष कृणोमि वः 1 अन्योः अन्यमसि हर्यत वत्सं  
जातमिवाध्या ।। अथर्व 3.30.1

तुम्हारे हृदय में सामनस्य हो, मन द्वेष रहित हो, एकीभाव हो, परस्पर करो जैसे गौ अपने नवजात बछड़े से करती है।

हमारा प्यार बिल्कुल निष्कपट, निःस्वार्थ भाव से पूर्ण समर्पण के साथ होना चाहिए। प्यार में कोई स्वार्थ की भावना, शर्त वा पूर्वाग्रह नहीं हो सकती अगर है तो वह प्यार नहीं व्यापार है।

प्यार व करुणा पाने की इच्छा करना कमजोर व्यक्ति की निशानी है जब की शक्तिशाली सदैव देना चाहता है। ऐसी शक्ति निराकार अजन्मा सर्वशक्तिमान परमान्मा की उपासना द्वारा ही सम्भव है।

बहुत सत्य कहा है— जिसके मन में प्रेम की हिलोरे नहीं उठती वह मृतक के समान है। वेद में मित्रास्य चक्षुषा समीक्षामहे कहकर हम सभी को परस्पर एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखने का आदेश दिया और मित्रता का भाव रखने के लिए परस्पर प्रेम अनिवार्य शर्त है।

वेद कहते हैं कि हम सब को मित्रता की दृष्टि से देखें। कोई भी आपके लिये अन्जान नहीं है सभी आपके मित्र बन सकते हैं। जरूरत इस बात की है कि हम सब के साथ प्रेम भाव रखें में कहा है

सं गच्छध्वं सं वदध्व सं वो मनांसि जानताम।

देवा भागं यथा पूर्वे संजानाम उपासते

ऐ ऐश्वर्य के अभिलाषी मनुष्यो ! तुम आपस में मिलकर चलो, मिलकर रहो, प्रेम से बातचीत करो, तुम एक दूसरे से मन मिलाकर ज्ञान प्राप्त करो। जिस प्रकार हमारे पूर्वज विद्वान एक दूसरे से अनेक प्रकार का ज्ञान प्राप्त करते हुए ऐश्वर्य और उन्नति प्राप्त करते थे, वैसे ही तुम भी करो।

## अपने शत्रु के कटु व्यवहार का बदला सद्भावनायुक्त ढंग से दें

नीला सूद

किसी के अपकार का बदला अपकार से देना या आंख फोड़ने वाले की बदले में उसकी भी आंख फोड़ देना उचित हो सकता है परन्तु इसके हानिकारक प्रभाव भी हो सकते हैं। चाहे आप युद्ध जीत लें परन्तु दिल के एक कोने में आपको कुछ खालीपन का अनुभव होता है और लगता है कि आपकी कोई मूल्यवान वस्तु आपसे दूर हो गई है।

महात्मा गांधी के शब्दों में, “आंख के बदले दूसरे की आंख को फोड़ने का परिणाम संसार को अन्धा कर सकता है।” समय बीतने के साथ किसी समय उपलब्धि दिखने वाली यह बात, निराशा व पछतावें में बदल जाती है। ऐसी परिस्थिति में, अपने प्रतिशोध को पूरा करने का दूसरा सुन्दर उपाय भी है और वह है कि हमारा बदला ऐसा हो कि दूसरे का हृदय परिवर्तन कर दे और आपसी वैमनस्य को खत्म कर आपसी सम्बन्धों को सुधार दे। ऐसा करने से गलत काम करने वाले के मन में एक नया परिवर्तन होता है। अक्सर ऐसा करने पर विरोध मित्रता का रूप ले लेता है जो कि एक उल्लेखनीय उपलब्धि कही जा सकती है। ऐसा करने से हमारे मित्रों की संख्या में वृद्धि होती है और यह कहने की आवश्यकता नहीं कि जिसके जितने अधिक मित्र होते हैं वह उतना ही अधिक इस धरती पर स्वयं को सुखी व सन्तुष्ट अनुभव करता है।

जैसा हम जानते हैं बर्लिन की दीवार पूर्वी बर्लिन और पश्चिमी बर्लिन को बांटती थी। कुछ पूर्वी बर्लिन वासियों ने पश्चिमी बर्लिन वासियों के प्रति गहरा द्वेष भाव अपने अन्दर उत्पन्न कर लिया था। इसी द्वेष भाव के कारण पूर्व बर्लिन वालों ने पश्चिम बर्लिन वासियों का अपमान करने के लिये एक ट्रक में कूड़ा, ईंट के टुकड़ें और अन्य अनापपनाप वस्तुओं की वस्तुयें भरकर चोरी छिपे पश्चिमी बर्लिन वासियों को एक टैंकर में भेजीं। जब पश्चिमी बर्लिन वालों को इसका पता लगा, तो वह इससे कुपित हुए और उन्होंने चाहा कि वह भी उसके बदले में वैसा ही व्यवहार करें। पश्चिम बर्लिन वासियों ने पूर्वी बर्लिन वासियों को एक ऐसा उपहार भेजने का निर्णय किया जिससे कि उनके किये गये अपमान का उचित बदला लिया जा सके। उनमें से एक बुद्धिमान व्यक्ति को जब पता लगा तो उसने उनको परामर्श दिया कि उनके भेजे सामान के बदले में उनको भोजन, कपड़े और चिकित्सा का सामान, दुर्लभ वस्तुयें एवं मूल्यवान पदार्थ भेजे। उन्होंने, उस सामान के साथ एक पत्र भी रखा, जिसमें कहा गया था कि हर कोई अपने सामर्थ्य और बुद्धि के अनुसार देता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि पश्चिमी बर्लिन के इस उदारपूर्ण कार्य से दोनों पक्षों में विश्वास का भाव एवं अच्छे सम्बन्ध पैदा हुए।

बुद्धिमान मनुष्य महान गुणों को जीवन में धारण करते हैं व उनका पालन करते हैं। एक जनूनी धर्मिक अन्धविश्वासी व्यक्ति समाज सुधारक सन्त स्वामी दयानन्द सरस्वती के अन्धविश्वासों व कुरीतियों के खण्डन एवं सत्य मान्यताओं में मण्डन से चिढ़कर प्रायः हर समय चिल्लाकर—चिल्लाकर उनके लिए अपशब्दों व गालियों का प्रयोग करता था। एक दिन स्वामीजी का एक अनुयायी उनके लिए फलों की एक टोकरी ले कर आया। स्वामीजी ने तुरन्त अपने एक अन्य भक्त को पास बुलाया और उसे टोकरी में से कुछ फल ले जाकर उस गेरुवें वेशभूषा वाले व्यक्ति को देने को कहा जो प्रतिदिन उन्हें गालियां दिया करता था। उन्होंने उसे यह संदेश भी भेजा— कि उसे इन फलों की अधिक आवश्यकता है क्योंकि स्वामीजी के प्रति अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए उसे गालियां देने में अपनी भारी ऊर्जा खर्च करनी पड़ती है। स्वामीजी का भक्त स्वामीजी की यह बात सुनकर हतप्रभ रह गया पर स्वामीजी की इच्छानुसार उसने उस व्यक्ति के पास जाकर उसको फल देकर स्वामी जी का सन्देश भी दे दिया। वह व्यक्ति स्वामीजी के उस व्यवहार से चकित रह गया और स्वयं को लज्जित अनुभव करते हुए उनके पास क्षमा मांगने जा

पहुँचा। उसका हृदय परिवर्तन हो गया और वह उनका अनुमागी भक्त बन गया। इस घटना से यह सिद्ध होता है कि उदारता व दान आदि गुणों को धारण करने से शत्रु को मित्र में बदला जा सकता है। यह प्रतिशोध के पवित्र तरीके को अपनाने से मिलने वाली शक्ति है।

प्रतिशोध की भवना से अन्धे होकर आंख के बदले आंख लेने की जगह इस प्रकार के प्रेम युक्त मधुर व्यवहार को अपनाकर आज के युग में शत्रुता के रवैये को मित्रता में बदला जा सकता है खास कर जबकि आज द्वेष भावना व इससे उत्पन्न हिंसा ने सबमें परस्पर डर पैदा किया हुआ है। यह स्थिति मानवता के लिए शर्मनाक है।

एक शायर ने कहा है  
करूं मैं दुश्मनी किससे,  
अगर दुश्मन भी हो अपना।  
मुहब्बत ने नहीं दिल में जगह छोड़ी,  
अदावत की॥

## REMEMBRANCE

My Grandfather was the Professor of History in Govt College Peshawar ( Now Pakistan). Not only this, he had raised a museum with his collection of rare antiques. After his death in 1942, the museum was acquired by the British Govt. Even Pt Jawahar Lal Nehru would seek audience from him to discuss important matters related with history. I and my family pay our obeisance to the great soul.



Prof Ratan Chand Sood

**Bhartendu Sood & family 9217970381**

**आप वैदिक थोटस के माध्यम से अपने प्रियजनों को याद कर सकते हैं**

आप वैदिक थोटस के माध्यम से अपने प्रियजनों को याद कर सकते हैं, अपने श्रद्धा सुमन अर्पित कर सकते हैं। आधा पेज में फोटो के साथ 10 पंक्तियों के 300 रुपये व पूरे पेज के जिस में फोटो के साथ आप 25 पंक्तियां दे सकते हैं, 700 रुपये लगेंगे। आप फोटो व अपने विचार वाट्स ऐप द्वारा 9217970381 या फिर ईंत्तजेववक/लीववणववणपदपर भेज सकते हैं। शुल्क के लिये 9217970381 पर आप पेटिऐम या फिर गुगल पे की सुविधा है। सहायता के लिये 9217970381 पर बात करें।

इसी तरह अपने परिवार व समाज में शुभ घटना आप हमारे पाठको व शुभचिंतको के साथ सांझा कर सकते हैं।

सम्पादक



## CHARITY HAS A WIDE CANVAS

Neela Sood

Though, philanthropy is measured all around the world by the amount of money one donates for the good cause, but charity has a wide canvas and cannot be measured alone in terms of money one donates. It can be shown in more ways than one; by teaching a trade, a vocation, by helping in setting up business which in turn prevents the 'need' to receive charity one can prove to be somebody's benefactor: Those with more time at their disposal than money to spare can volunteer to help others in 'kind'. Charity can reach people, in many forms. Infact, selflessly helping others is the best form of charity as was seen during the recent pandemic when lacs of health workers risked their lives to save lives of others, who were mostly strangers for them.

But there are heartwarming stories of daily-wagers, house maids and labourers who live their lives frugally due to their economic condition, but who make donations through their savings, to enable others have the opportunities they missed, proving that one does not have to be rich to be charitable and philanthropic. I remember the story of a Kerala woman Mary Sebastian, working as a contract worker in the packing section of a factory, who with a desire to help a needy put Rs 100 note inside one of the food packets, which were to be distributed among flood victims.

Salutations to such hearts who are blessed with richness of charitable thoughts and deeds.

Sometimes back media carried a beautiful and heartwarming story of one Basant Kumar who has been carrying his elder brother Krishna Kumar on his back for the last 15 years, ever since the 19-yearold contracted polio and beauty is that both defied odds to crack the prestigious IIT exam. Born to an impoverished family in Bihar, the brothers struggled through school and later coaching centres in Rajasthan's Kota. In an interview Krishna said, "Basant serves food to me, even helps me attend my nature calls daily and performs all my daily routine work apart from taking me to classes,"

Basant told that Polio crippled Krishna couldn't join school for two years. When he grew up, he started to take Krishna with him to school and that's how the journey of education started together. Then we shifted from the village school – which was till class 8 only – to a secondary school in a neighbouring village. Continuing he said that he liked to carry his brother on his back as he enjoyed working and serving his brother. Two of their elder brothers worked in a Mumbai motor garage to put Basant and Krishna to school.

Generosity, empathy and love are synonymous of charity which one can do even if he has no money to donate.

## REMEMBRANCE

My tributes to my father Late Shri Balvir Verma, who retired as the Director in ICAR Govt. of India. To him good education, good manners and etiquette were the attributes, which any parent should strive to give to his children. He laid special emphasis on character building and living a virtuous life. He was a man of unimpeachable integrity which he wanted us to embrace.

**Neela Sood, Bhartendu Sood & Family**

**9217970381**



**Sh. Balvir Verma**

रजि. नं. : 4262/12

॥ ओ३म् ॥

फोन : 94170-44481, 95010-84671



# महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय - 1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059  
 शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली  
 आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

## MRS SONIA CELEBRATED HER DAUGHTER VANSHIKA BIRTHDAY WITH SLUM CHILDREN



धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह

धार्मिक सखा 500 प्रति माह

धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह

धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह

धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह

धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते हैं :-

A/c No. : 32434144307

Bank : SBI

IFSC Code : SBIN0001828

All donations to this organization are exempted under section 80G



स्वर्गीय  
श्रीमती शारदा देवी  
सूद

निर्माण के 63 वर्ष

# गैस ऐसीडिटी शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई  
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)



स्वर्गीय  
डॉ० भूपेन्द्र नाथ गुप्त  
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradun-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwalior-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajjabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jalandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552,

Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

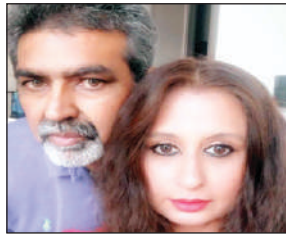
शारदा फार्मासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45-ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

## जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया



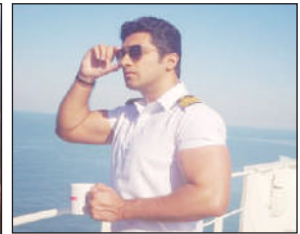
ABHA POPLI



BABLOO SHARMA



DAMINI



CAPT ASHWIN VERMA



MRS AND MR. O.P.NANDWANI



MRS CHUNNI



MUKESH GUPTA

Mrs Vinod Bala donated ration to bal Ashram

Shalini Nagpal D/o Dr Saroj Miglani performing Havan with the children



**DIPLAST**  
TRUSTED QUALITY WITH BEST TECHNOLOGY SINCE 1972  
FOR BETTER HOMES

**48 Years**

ISO 9001:2015

DIPLAST Gold

DIPLAST TIL Gold+

DIPLAST PLATINUM + FOAM 5 LAYER

DIPLAST WATER STORAGE TANKS

DIPLAST PVC Pressure Pipes

DIPLAST PVC Electrical Conduits

DIPLAST PVC SWR Pipes

DIPLAST PLANTER

Learn Waste Segregation & Composting on Zoom Meeting  
Contact : 9041655102

IS : 12701 Water Storage Tanks  
IS : 4985 PVC Pressure Pipes  
IS : 9537 PVC Electrical Conduits  
IS : 13592 PVC SWR Pipes

DIPLAST PLASTICS LTD: C-36, Indl. Area, Phase - 2, SAS Nagar, Mohali (Punjab)  
Email-diplastplastic@yahoo.com Website-www.diplast.com Ph. 9814014812 0172-4185973, 5098187

## विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर-वधु की तलाश,  
प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये  
शुभ-अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते हैं।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

**Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh  
9217970381 and 0172-2662870**